हिन्दी रचना
स्नातक — भाग-1

प्रिय छात्र-छात्राओं!

पिछले वर्ग में निबंध-लेखन पर विस्तार से चर्चा हुई थी। निबंध के असीमित विषयों में से सिर्फ परीक्षोपयोगी निबंधों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए हम निबंध के चार प्रकारों में से एक-एक उदाहरण लिखित रूप में प्रस्तुत करेंगे। शेष परीक्षोपयोगी निबंधों की सूची अलग से दे दी जायेगी जिसका लेखन आप स्वयं करेंगे। आज व्याख्यात्मक निबंधों में से एक निबंध यहाँ उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है। इस निबंध का शीर्षक है —

"करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान"

अथवा

अभ्यास का महत्व

कुछ पुराने कवियों की रचनाएँ इतनी अनुभवसिद्ध और सुगम सत्य की तरह होती हैं कि शीघ्र ही लोगों की जुबान पर चढ़कर लोकोक्ति बन जाती हैं। अभ्यास के महत्व को प्रदर्शित करती हुई निम्नलिखित रचना भी इसी तरह की है, जिसका भावार्थ यह है कि कोमल रेशों से बुनी हुई रस्सी जब बार-बार घिसकर सख्त पत्थर पर अपने निशान छोड़ जाती है तो निरंतर अभ्यास करते रहने पर मूर्ख भी विद्वान बन जाते हैं। पूरी पंक्तियाँ इस तरह हैं —

"करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान॥"

अब प्रश्न यह है कि जीवन में अभ्यास को सफलता का मूलमंत्र क्यों माना गया है? मेरी समझ में अव्वल तो जन्मजात प्रतिभा हर किसी को नहीं होती और अधिकांश लोग अभ्यास द्वारा ही सफलता के शिखरों पर पहुँचते हैं। दूसरी बात यह भी महत्वपूर्ण है कि प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति भी बिना अभ्यास के प्रतिभा का समुचित या पूरा-पूरा इस्तेमाल नहीं कर पाता। अभ्यास के बिना उसकी प्रतिभा में निखार नहीं आता। प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति कभी-कभी अपनी प्रतिभा के भरोसे बैठे रह जाते हैं और अभ्यासी उन्हें पीछे छोड़ देते हैं। इस तरह, अभ्यस्त होने का अर्थ है अचूक पद्धति प्राप्त कर लेना — दक्षता प्राप्त कर लेना जिसके बिना प्रतिभाशाली का भी काम नहीं चलता।

→

संस्कृत के विश्व-प्रसिद्ध कवि कालिदास बचपन में वज्रमूर्ख माने जाते थे। कहा जाता है कि जिस डाल पर वे बैठे थे, उसी को सामने से काट रहे थे। अपनी बुद्धिमती पत्नी से सुबुद्धि पाकर उन्होंने अध्ययन और अभ्यास के महत्त्व को पहचाना और आगे चलकर महाकवि और नाटककार बने तथा राजदरबार को सुशोभित किया। गोस्वामी बनने वाले तुलसीदास अपने यौवन-काल में विलासी प्रवृत्तियों के शिकार थे। अपनी पत्नी रत्नावली के धिक्कार-भरे शब्दों को सुनकर कठोर साधना की तथा रामचरितमानस जैसे कालजयी ग्रंथ की रचना की जिसमें धर्म, दर्शन, नीति और साहित्य का अभूतपूर्व समन्वय है।

युगद्रष्टा कबीर को कौन नहीं जानता? वे एक अनपढ़ जुलाहे थे। अभ्यास ने उन्हें असाधारण बना दिया। आज उनकी गणना क्रांतिद्रष्टा और समाज-सुधारक कवियों में होती है। अमेरिका के महान राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन अपने जीवन के प्रारंभिक काल में अत्यंत संकोची व्यक्ति थे। जब उन्होंने राजनीति में आने का निश्चय किया तो उनके लिए सबसे बड़ा संकट था — लोगों के सम्मुख बोलकर अपने विचार प्रकट करना। इससे हताश होने की जगह वे प्रतिदिन जंगल में जाते और पेड़ों के सम्मुख बोल-बोलकर अपने विचार प्रकट करते। कालान्तर में वे श्रेष्ठ वक्ता के रूप में विख्यात हुए।

इसी तरह अपनी माता जीजाबाई के साथ अभ्यास करते हुए बहादुर और रणकुशल बनने वाले शिवाजी हों अथवा आधी उम्र बीत जाने के पश्चात लिखने का अभ्यास करने वाले महान नाटककार जॉर्ज बर्नार्ड शॉ — सबकी जीवनी से हमें यही संदेश मिलता है कि जीवन के विविध क्षेत्रों में अभ्यास ही सफलता की सीढ़ी है। यह वस्तुतः एक साधना है जो दुबले-पतले राममूर्ति को काफी सबल-सशक्त पहलवान बना देती है। इसी के बल पर आज स्वामी रामदेव योग, आयुर्वेद और पतंजलि के उत्पादों के द्वारा घर-घर में लोकप्रिय हो चुके हैं। यह साधना से ही संभव हुआ है।

हम अपने विद्यार्थी जीवन में भी अभ्यास का महत्त्व बार-बार प्रमाणित होते हुए देखते हैं। जो छात्र वर्ष भर अभ्यास में जुटे रहते हैं वे परीक्षाओं में उन छात्रों को पीछे छोड़ देते हैं जो अपनी प्रतिभा के भरोसे बैठे रहते हैं और परीक्षा के कुछ पहले जैसे-तैसे तैयारी करते हैं। अल्पबुद्धि के छात्र अभ्यास के बल पर अच्छे पदों पर आसीन

→

हो जाते हैं। वे कुशाग्र बुद्धि माने जाने वाले छात्रों की तरह कोई काम आनन-फानन में नहीं करते। वे स्थिरचित्त और एकाग्र होकर शिक्षकों की बातें सुनते हैं और निरंतर अभ्यास में जुटे रहते हैं।

आखिर अभ्यास है क्या? दत्तचित्तता और बारंबारता का योग जो कार्यकुशल ही नहीं बनाता, पूर्णता भी प्रदान करता है। शुरुआती दौर की असफलताएँ भी उसे हताश नहीं कर पातीं और वह संकल्प को सिद्धि तक पहुँचा कर ही दम लेता है। यहाँ एक बात और भी उल्लेखनीय है। अभ्यास छोड़ देने पर योग्य से योग्य व्यक्ति भी अपनी क्षमता या तो खो देता है या उसका समुचित इस्तेमाल नहीं कर पाता। संस्कृत में कहा गया है —

"अनभ्यासे विषम विद्या"

अर्थात बिना अभ्यास के विद्या भी ज़हर हो जाती है। अनभ्यास से विद्या के अनुचित प्रयोग की संभावना बढ़ जाती है, इसलिए वह विषतुल्य है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि अभ्यास एक ओर जहाँ प्रतिभा को निखारता है और मनुष्य की क्षमताओं को सुनिश्चित कर उन्हें पूर्ण बनाता है, वहीं दूसरी ओर प्रतिभाहीन व्यक्ति को भी सफलता की चोटी पर पहुँचा देता है। अभ्यास सभी के लिए करणीय है और छात्र-छात्राओं के लिए तो यह अत्यंत आवश्यक है।